सं.श्रो.वि./एफ.डी./108-85/28787--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. ऊषा टेलीहोस्ट लि. 14/7 . मथुरा रोड़, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री राम गोपाल तथा प्रवन्धकों के मुध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है,

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गंक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की की धारा अ के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय फ़रीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्देष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री राम गोपाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.ग्रो.वि./एफ.डी./129-85/28794.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि मैं. विपृति उद्योग प्रा.लि., 15 माईल स्टोन मथुरा रोड़, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री महेश झा तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है,

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनी समझते हैं।

इस लिए, ग्रंब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हिरयाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम. 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 57/11245 दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फ़रीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री महेश झा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है यदि नहीं तो वह विस राहत का हकदार है ?

सं.श्रो.वि./एफ.डी./120-85/28801.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. एण्डी वूलन एण्ड सिल्क मिल मधुरा रोड़, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री राम भरत तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है,

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415—3—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये ग्रिधिसूचना सं. 11495—जी—श्रम 57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फ़रीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री राम भरत की सेवाग्नीं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 17 जुलाई, 1985

सं.ग्रो.वि./एफ.डी./108-85/29640.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. हिन्दुस्तान बायरज लि, फरीदाबाद के श्रमिक श्री अनुग्रह नारायण सिंह तथा प्रबन्धकीं के मध्य इसमें इसके बाद लिखित माम ले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है,

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना स. 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विाबादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मन्मल न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त अपन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :--

े क्या श्री ग्रनुग्रह नारायण सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.ग्रो.वि./एफ.डी./105-85/29647---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. हिन्दुस्तान बायर लि., 267268, सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री चुन्नी लाल तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है,

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिए, सब, सौद्योगिक विवाद स्रिधितियम, 1947 की धारा. 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचन, सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचन। सं. 11495-जी-श्रम 57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचनां की धारा 7 के अधीन गिष्ठिटत श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :---

क्यां श्री चुन्नी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो.वि./एफ़.डी.-11/106-85/29654-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. स्रोसवाल स्टील लि, प्लाट नं. 263, सैक्टरं-24, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री उपेन्द्र प्रसाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई स्रौद्योगिक विवाद है,

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझत है।

इस लिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फ़रीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबधित मामला है :---

क्या श्री उपेन्द्र प्रसाद की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.स्रो.वि./एफ.डी./49-85/29661-—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राथे हैं कि मै. राजी मशीन टूट्ज सैक्टर-27-ए, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री दवेन्द्र शर्मा तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित गामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है,

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इसं लिए, शुब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग), द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधिमूचना सं. 5415—3—शम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिमूचना सं. 11495—जी—श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिमूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फ़रीदाबाद को विद्वादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के शिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :—

. क्या श्री देवेन्द्र शर्मा की सेवाग्रों का सम्रापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?